'कानों में कंगना' शीर्षक कहानी का सारांश प्रस्तुत करें।

प्राध्यापक- डॉ० सुनीता चन्द्र पाठक
एम०एल० कॉलेज [illegible] । [illegible]

...... किरण की वह भोली नरेन्द्र के हृदय की गहराइयों में उतर गयी। वह उसकी ~~सरलता~~ सरलता, सहजता पर मुग्ध हो गया। उसने उसे न केवल अपनाया वरन अपने हाथों से उसके कानों से कंगन उतार कर उसके हाथों में पहना दिया। अपने अध्ययन की समाप्ति पर वह कुछ स्वर्णमुद्राएं, वस्त्र एवं किरण के लिए एक जोड़ा ~~कंगना~~ कंगन लेकर योगीश्वर के पास गया। योगीश्वर ने किरण का हाथ उसके हाथ में सौंपते हुए ~~[illegible]~~ स्वयं संसार से दूर हिमालय के लिए प्रस्थान कर गये। इन सारी बातों से वह धन्य हो गया। परन्तु किया-कलाप इतने शीघ्र गति से हुए कि वह आश्चर्यचकित होकर रह गया। यद्यपि किरण उसके हृदय की गहराइयों में बस गयी थी तथापि इतनी जल्दी यह सब घटित हो जायेगा उसने सोचा भी नहीं था। अतः वह किरण को लेकर अपने घर आ गया। जीवन के दिन जल्दी-जल्दी बीतने लगे। किरण अत्यन्त सुन्दरी थी। बिना किसी श्रृंगार के उसका रूप दिव्य था किन्तु वन की प्राकृतिक परिवेश में जो रूप की सात्विकता थी किरण कृत्रिमता उसे नहीं भा सकी। नरेन्द्र उसके सौन्दर्य पर कभी कविताएँ लिखते कभी कानों की बालियां देखता या कोई अन्य आभूषण स्वीकार करता रहता था। किरण भी अपने नाम की इस अभ्यर्थना से पुलकित थी। उसका आचरण सरिता के समान ~~[illegible]~~ प्रवाहित हो रहा था। इसी बीच नरेन्द्र एक दिन अपने मित्र मोहन के घर नाच देखने गया। उस दिन उस नर्तकी के रूप, उसके संगीत एवं उसके नृत्य पर ऐसा रीझा कि उसकी अपनी पत्नी किरण का रूप उसके हृदय से उतर गया। वह उस नर्तकी के रूप जाल में उलझता ही गया। उसे प्रसन्न करने के लिए तरह-तरह के आभूषण कीमती बनारसी साड़ी अन्य श्रृंगार उपहार लेकर उसके समक्ष उपस्थित होने लगा। वह नर्तकी भी नरेन्द्र को